Forest Research Institute, Dehradun

Training on
"Market Mechanism of Agroforestry products"
(15-9-2020)

Agroforestry is the practice of growing trees with agriculture crops on farmlands. It is a beneficial for the farmers besides helping in maintaining environmental sustainability. Sustainability of efficient and effective marketing of agroforestry products depends on the active support of traders, producers and market channels.

With a view of orienting the newly recruited Technical Assistants also those Technical Assistants already engaged in different Divisions of FRI, Dehradun and also as part of the HRD Plan of ICFRE, the Extension Division of Forest Research Institute, Dehradun conducted a half day training on ***"Market mechanism of Agroforestry products".***

Mrs. Richa Misra, IFS Head Extension Division welcomed Shri Arun Singh Rawat, IFS, Director General, Indian Council of Forestry Research & Education and Director, FRI and gave a brief background about the training. Shri Arun Singh Rawat inaugurated the training and in his inaugural address, he said that in the institute, all Technical Assistants and Technicians are engaged in different Divisions of FRI but need to be exposed to the various activities carried out by the different Divisions. Hence, the training will certainly be beneficial to all participants in developing an overview of the agroforestry system and its marketing. He also mentioned the scenario of demand and supply in the country and said that gap between demand and supply could be filled the adoption of agroforestry on a large scale but marketing linkages need to be robust.

During technical sessions, Dr. Charan Singh, Scientist-E, Extension Division delivered a lecture on ***Agroforestry and agroforestry products***. He spoke about agroforestry and its need. He mentioned that agroforestry may be beneficial to farmers if it practiced in scientific way and there is an availability of market for agroforestry products. He gave a detailed account of agroforestry systems and spoke about the selection of agroforestry species should be made according to site and ecological conditions.

Dr. D. P. Khali delivered a lecture on ***'Value addition to agroforestry products for effective Marketing***. He spoke about wood processing based technologies developed by the institute and their benefit to farmers. He mentioned that wood can be substantially improved through scientific processing. He spoke about wood seasoning, plywood making and wood preservation through eco-friendly wood preservatives.

Dr. H. P. Singh delivered a talk on ***Marketing of agroforestry products and criteria and method of Market Survey.*** He also spoke about farm forestry survey and mentioned that survey is helpful for assessment of farm forestry produce in particular season and can be linked with market trends. He also highlighted market channels and their function. He suggested that marketing chain should be made simple so that farmers can search markets easily to sale their products.

After successful completion of the programme, Mrs. Richa Misra distributed certificates to all participants. The programme ended by the Vote of thanks by Dr. Rambir Singh, Scientist-D, Extension Division. The anchoring of the programme was carried by Dr. Charan Singh, Scientist-E, Extension Division. Other members of the team including Dr. Devendra Kumar, Scientist-E, Shri Ajay Gulati, Assistant Chief Technical Officer, Shri Vijay Kumar, ACF and Shri Preet Pal Singh, Dy Ranger did a commendable work in making the programme successful.

Glimpses of the training

Print Media coverage

Amar Ujala

कृषि वानिकी से दूर कर सकते हैं मांग और आपूर्ति का अंतर : रावत

माई सिटी रिपोर्टर

तकनीशियनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में बोले एफआरआई निदेशक

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) की ओर से मानव संसाधन विकास योजना के तहत तकनीकी सहायकों और तकनीशियनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन में आने वाली बाधाओं पर चर्चा की गई।

वन अनुसंधान संस्थान निदेशक अरुण सिंह रावत ने कहा कि देश में मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को बड़े पैमाने पर कृषि वानिकी को अपनाने से भरा जा सकता है, लेकिन विपणन मजबूत और प्रभावी होना चाहिए। कहा कि संस्थान के सभी तकनीकी सहायक और तकनीशियन अपने कर्तव्यों को पूर्ण निष्ठा के साथ निभा रहे हैं। बताया कि यह प्रशिक्षण विशेषज्ञों की ओर से दिया जा रहा है, जिससे कि वह अपने कार्य को और भी अच्छे तरीके से कर सकें। कहा कि यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के खेत और बाजार सर्वेक्षण के दौरान फायदेमंद होगा। वैज्ञानिक डॉ. चरण सिंह ने कृषि वानिकी और कृषि वानिकी उत्पादों पर व्याख्यान दिया। कहा कि अगर वैज्ञानिक तरीके से इसे अपनाया जाए तो कृषि वानिकी किसानों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

कहा कि इन उत्पादों के लिए उचित क्षेत्रीय बाजार की उपलब्धता भी आवश्यक है। डीपी खाली ने संस्थान द्वारा विकसित लकड़ी प्रसंस्करण आधारित प्रौद्योगिकियों और किसानों को उनके लाभ के बारे में बताया। एचपी सिंह ने कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन और बाजार सर्वेक्षण के बारे में बताया। इस दौरान ऋचा मिश्रा, रामबीर सिंह, डॉ. देवेंद्र कुमार, अजय गुलाटी, विजय कुमार, प्रीत पाल सिंह मौजूद रहे।

Jan Bahar

बाजार तंत्र पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया

देहरादून, संवाददाता। आजकल कृषि क्षेत्र में कृषि फसलों के साथ पेड़ों को उगाने के लिए कृषि वानिकी का प्रचलन है। यह किसानों के लिए एक लाभदायक प्रथा है और पर्यावरणीय स्थिरता को भी बनाए रखती है।

कृषि वानिकी अपने उत्पादों के लिए विपणन रुझानों पर पनपती है और निर्वाह करती है। कृषि वानिकी उत्पादों के कुशल और प्रभावी विपणन की निरंतरता व्यापारियों से उत्पादकों और बाजार परिवर्तन के सक्रिय समर्थन पर निर्भर करती है। कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन के रुझान और बाधाओं को ध्यान में रखते हुए विस्तार प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून ने मानव संसाधन और विकास मंत्रालय के मानव संसाधन विकास योजना के तहत तकनीकी सहायकों और संस्थान के तकनीशियनों के लिए कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्रीमती ऋचा मिश्रा, भा.व.से. प्रमुख विस्तार विभाग ने अरुण सिंह रावत, भा.व.से., महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद और निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण की परिचयात्मक टिप्पणी दी। अरुण सिंह रावत ने प्रशिक्षण का उद्घाटन किया और अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि संस्थान में सभी तकनीकी सहायक और तकनीशियन बहुमुखी कर्तव्यों में लगे हुए हैं और यह प्रशिक्षण संबंधित क्षेत्र में काम करने वाले विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया जा रहा है। इसलिए प्रशिक्षण निश्चित रूप से सभी प्रतिभागियों के लिए विशेष रूप से खेत और बाजार सर्वेक्षण के दौरान फायदेमंद होगा। उन्होंने देश में मांग और आपूर्ति के परिदृश्य का भी उल्लेख किया और कहा कि मांग और आपूर्ति के बीच अंतर बड़े पैमाने पर कृषि वानिकी को अपनाने से भरा जा सकता है। लेकिन विपणन का रुझान मजबूत और प्रभावी होना चाहिए। तकनीकी सत्र के दौरान डॉ चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई विस्तार प्रभाग ने कृषि वानिकी और कृषि वानिकी उत्पादों पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कृषि वानिकी और इसकी जरूरत के बारे में बताया। उन्होंने उल्लेख किया कि अगर वैज्ञानिक तरीके से इसको अपनाया जाए तो कृषि वानिकी किसानों के लिए फायदेमंद हो सकती है और कृषि वानिकी उत्पादों के लिए उचित क्षेत्रीय बाजार की उपलब्धता की भी आवश्यकता है।

उन्होंने कृषि वानिकी प्रणाली का विवरण दिया और बताया कि क्षेत्र और पारिस्थितिक स्थितियों के अनुसार कृषि वानिकी प्रजाति का चयन किया जाना चाहिए। डी. पी. खाली ने प्रभावी विपणन के लिए कृषि वानिकी उत्पादों के मूल्य वर्धन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित लकड़ी प्रसंस्करण आधारित प्रौद्योगिकियों और किसानों को उनके लाभ के बारे में बताया। उन्होंने उल्लेख किया कि एक लकड़ी को वैज्ञानिक प्रसंस्करण द्वारा अच्छा बनाया जा सकता है। उन्होंने कृषि वानिकी सर्वेक्षण के बारे में भी बताया और इस बात का उल्लेख किया कि इस प्रकार का सर्वेक्षण विशेष रूप से कृषि वानिकी उत्पादन के मूल्यांकन के लिए सहायक है और इसे बाजार के रुझान के साथ जोड़ा जा सकता है। उन्होंने बाजार चैनलों और उनके कार्य पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने सुझाव दिया कि विपणन श्रृंखला को सरल बनाया जाना चाहिए ताकि किसान अपने उत्पादों को बेचने के लिए आसानी से बाजार खोज सकें। कार्यक्रम के सफल समापन के बाद श्रीमती ऋचा मिश्रा ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। कार्यक्रम का समापन रामबीर सिंह, वैज्ञानिक-डी विस्तार प्रभाग द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ। कार्यक्रम का संचालन विस्तार प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. चरण सिंह द्वारा किया गया था। डॉ. देवेंद्र कुमार वैज्ञानिक-ई अजय गुलाटी सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी विजय कुमार एसीएफ और प्रीत पाल सिंह, डिप्टी रेंजर सहित टीम के अन्य सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एक सराहनीय कार्य किया।

Rashtriya Sahara

कृषि और वानिकी से होगा मांग और पूर्ति में संतुलन

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र पर प्रशिक्षक कार्यक्रम आयोजित

वन अनुसंधान संस्थान में मानव संसाधन विकास योजना के तहत कृषि-वानिकी उत्पादों के वाजार तंत्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं निदेशक वन अनुसंधान संस्थान अरुण सिंह रावत ने किया।

उन्होंने कहा कि संस्थान में तकनीकी सहायक और तकनीशियन कई कार्यों में लगे हुए हैं। यह प्रशिक्षण विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया जा रहा है। प्रशिक्षण सभी प्रतिभागियों के लिए खेत और वाजार सर्वेक्षण के दौरान फायदेमंद होगा।

उन्होंने मांग और आपूर्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि मांग और आपूर्ति के वीच अंतर को कृषि व वानिकी को अपनाने से भरा जा सकता है। विपणन का रुझान मजवूत और प्रभावी होना चाहिए। तकनीकी सत्र में वैज्ञानिक डा. चरण सिंह ने कृषि वानिकी और कृषि वानिकी उत्पादों पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि यदि वैज्ञानिक तरीके से इसको अपनाया जाए तो कृषि व वानिकी किसानों के लिए फायदेमंद है। कृषि व वानिकी उत्पादों के लिए वाजार की उपलब्धता आवश्यक है। डा. डीपी खाली ने कृषि वानिकी उत्पादों के मूल्यवर्द्धन पर विचार रखे।

उन्होंने इको फ्रेंडली लकड़ी परिरक्षकों के माध्यम से लकड़ी के प्लाइवुड वनाने और लकड़ी के संरक्षण के वारे में वताया। एचपी सिंह ने कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन और वाजार सर्वेक्षण की कसौटी और विधि पर वात की।

उन्होंने सुझाव दिया कि विपणन श्रृंखला को सरल वनाया जाना चाहिए ताकि किसान उत्पादों को वेचने के लिए आसानी से वाजार खोज सके। कार्यक्रम के समापन पर ऋचा मिश्रा ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर वैज्ञानिक डा. देवेंद्र कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी अजय गुलाटी, विजय कुमार, प्रीतपाल सिंह और रामवीर सिंह आदि मौजूद रहे।

Dainik Jagran

कृषि वानिकी से पूरी होगी लकड़ी की मांग

देहरादूनः वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) में कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र के विषय पर एक दिनी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें कृषि वानिकी के तकनीकी सहायकों व तकनीशियनों के भाग लिया। बुधवार को संस्थान के विस्तार प्रभाग की ओर से आयोजित प्रशिक्षण का उद्घाटन आइसीएफआरई के महानिदेशक एएस रावत ने किया। उन्होंने कहा कि विभिन्न प्रयोग के लिए लकड़ी की मांग के अनुरूप देश में उत्पादन नहीं हो पाता है। अधिकांश मांग आयात के जरिये पूरी की जाती है। हालांकि, कृषि वानिकी के जरिये इस मांग को पूरा किया जा सकता है। सिर्फ जरूरत बाजार की मांग के अनुरूप तंत्र विकसित करने की है। इससे पर्यावरणीय लक्ष्य भी हासिल हो पाएंगे। वहीं, कृषि वानिकी के विशेषज्ञ डीपी खाली ने लकड़ी प्रसंस्करण की विभिन्न तकनीक के बारे में बताया। इस अवसर पर विस्तार प्रभाग की प्रमुख ऋचा मिश्रा, एचपी सिंह, डॉ. चरण सिंह, डॉ. देवेंद्र कुमार, अजय गुलाटी आदि ने विचार रखे। (जास)

I-next

कृषि वानिकी से होगी लकड़ी की मांग

DEHRADUN (15 Sep): वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र के विषय पर एक दिनी प्रशिक्षण आयोजित किया गया. इसमें कृषि वानिकी के तकनीकी सहायकों व तकनीशियनों के भाग लिया. बुधवार को संस्थान के विस्तार प्रभाग की ओर से आयोजित प्रशिक्षण का उद्घाटन आइसीएफआरई के महानिदेशक एएस रावत ने किया.

कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

देहरादून (संवाददाता)। आजकल कृषि क्षेत्र में कृषि फसलों के साथ पेड़ों को उगाने के लिए कृषि वानिकी का प्रचलन है। यह किसानों के लिए एक लाभदायक प्रथा है और पर्यावरणीय स्थिरता को भी बनाए रखती है। कृषि वानिकी अपने उत्पादों के लिए विपणन रुझानों पर पनपती है और निर्वाह करती है। कृषि वानिकी उत्पादों के कुशल और प्रभावी विपणन की निरंतरता व्यापारियों से उत्पादकों और बाजार परिवर्तन के सक्रिय समर्थन पर निर्भर करती है।

कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन के रुझान और बाधाओं को ध्यान में रखते हुए विस्तार प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून ने मानव संसाधन और विकास मंत्रालय के मानव संसाधन विकास योजना के तहत तकनीकी सहायकों और संस्थान के तकनीशियनों के लिए कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। ऋचा मिश्रा, भा-व-से- प्रमुख विस्तार विभाग ने अरुण सिंह रावत, भा-व-से-, महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद और निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण की परिचयात्मक टिप्पणी दी। अरुण सिंह रावत ने प्रशिक्षण का उद्घाटन किया और अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि संस्थान में सभी तकनीकी सहायक और तकनीशियन बहुमुखी कर्तव्यों में लगे हुए हैं और यह प्रशिक्षण संबंधित क्षेत्र में काम करने वाले विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया जा रहा है।

इसलिए प्रशिक्षण निश्चित रूप से सभी प्रतिभागियों के लिए विशेष रूप से खेत और बाजार सर्वेक्षण के दौरान फायदेमंद होगा। उन्होंने देश में मांग और आपूर्ति के परिदृश्य का भी उल्लेख किया और कहा कि मांग और आपूर्ति के बीच अंतर बड़े पैमाने पर कृषि वानिकी को अपनाने से भरा जा सकता है। लेकिन विपणन का रुझान मजबूत और प्रभावी होना चाहिए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते अधिकारी।

तकनीकी सत्र के दौरान डॉ चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई विस्तार प्रभार ने कृषि वानिकी और कृषि वानिकी उत्पादों पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कृषि वानिकी और इसकी जरूरत के बारे में बताया।

उन्होंने उल्लेख किया कि अगर वैज्ञानिक तरीके से इसको अपनाया जा, तो कृषि वानिकी किसानों के लिए फायदेमंद हो सकती है और कृषि वानिकी उत्पादों के लिए उचित बाजार की उपलब्धता की भी आवश्यकता है। उन्होंने कृषि वानिकी प्रणाली का विवरण दिया और बताया कि और पारिस्थितिक स्थितियों के अनुसार कृषि वानिकी प्रजाति का चयन किया जाना चाहिए। डीपी खाली ने प्रभावी विपणन के लिए कृषि वानिकी उत्पादों के मूल्य वर्धन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित लकड़ी प्रसंस्करण आधारित प्रौद्योगिकियों और किसानों को उनके लाभ के बारे में बताया। उन्होंने उल्लेख किया कि एक लकड़ी को वैज्ञानिक प्रसंस्करण द्वारा अच्छा बनाया जा सकता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक प्रेमा उनियाल द्वारा शिखर सन्देश प्रेस 53/1 नई बस्ती चुक्खूवाला, देहरादून से मुद्रित तथा 53/1 नई बस्ती चुक्खूवाला देहरादून से प्रकाशित।
कार्यालय : 219 नेशविला रोड, देहरादून
पं.स. 54361/92,
फोन:- 2653171, फैक्स 0135-2653171
मो. न. 9412347171, 9259692447
पो.रजि नं.:- यू.ए./डी.ओ./डी.डी.एन.-48/2015-2017
सम्पादक:- आई.पी. उनियाल
सह सम्पादक :- शरद उनियाल
shikhar_sandesh@rediffmail.com
rantraibar@gmail.com

The Hawk

Training On 'Market Mechanism Of Agroforestry Products'

Dehradun (The Hawk): Agroforestry is the practice of growing trees with agriculture crops on farmlands. It is a beneficial for the farmers besides helping in maintaining environmental sustainability. Sustainability of efficient and effective marketing of agroforestry products depends on the active support of traders, producers and market channels.

With a view of orienting the newly recruited Technical Assistants also those Technical Assistants already engaged in different Divisions of FRI, Dehradun and also as part of the HRD Plan of ICFRE, the Extension Division of Forest Research Institute, Dehradun conducted a half day training on "Market mechanism of Agroforestry products".

Mrs. Richa Misra, IFS Head Extension Division welcomed Shri Arun Singh Rawat, IFS, Director General, Indian Council of Forestry Research & Education and Director, FRI and gave a brief background about the training. Shri Arun Singh Rawat inaugurated the training and in his inaugural address, he said that in the institute, all Technical Assistants and Technicians are engaged in different Divisions of FRI but need to be exposed to the various activities carried out by the different Divisions. Hence, the training will certainly be beneficial to all participants in developing an overview of the agroforestry system and its marketing. He also mentioned the scenario of demand and supply in the country and said that gap between demand and supply could be filled the adoption of agroforestry on a large scale but marketing linkages need to be robust.

During technical sessions, Dr. Charan Singh, Scientist-E, Extension Division delivered a lecture on Agroforestry and tioned that agroforestry may be beneficial to farmers if it practiced in scientific way and there is an availability of market for agroforestry products. He gave a detailed account of agroforestry systems and spoke about the selection of agroforestry species should be made according to site and ecological conditions.

Dr. D. P. Khali delivered a lecture on 'Value addition to agroforestry products for effective Marketing. He spoke about wood processing based technologies developed by the institute and their benefit to farmers. He mentioned that wood can be substantially improved through scientific processing. He spoke about wood seasoning, plywood making and wood preservation through eco-friendly wood preservatives.

Dr. H. P. Singh delivered a talk on Marketing of agroforestry products and criteria and method of Market Survey. He also spoke about farm forestry survey and mentioned that survey is helpful for assessment of farm forestry produce in particular season and can be linked with market trends. He also highlighted market channels and their function. He suggested that marketing chain should be made simple so that farmers can search markets easily to sale their products.

After successful completion of the programme, Mrs. Richa Misra distributed certificates to all participants. The programme ended by the Vote of thanks by Dr. Rambir Singh, Scientist-D, Extension Division. The anchoring of the programme was carried by Dr. Charan Singh, Scientist-E, Extension Division. Other members of the team including Dr. Devendra Kumar, Scientist-E, Shri Ajay Gulati, Assistant Chief Technical Officer, Shri Vijay Kumar, ACF and Shri Preet Pal Singh, Dy Ranger did a commendable work in making the programme successful.

Presentation Of Farm Ordinances In Parliament Has Exposed SAD Farce On Issue: Captain Amarinder

Chandigarh (The Hawk): With the BJP-led NDA government going ahead with laying the ordinances on the table of the House on the very first day of the Parliament session, instead of accepting SAD's so-called plea to defer the same, the Akali charade on the issue had been laid bare, said the Punjab Chief Minister ,Captain Amarinder Singh.

Captain Amarinder alleges on Tuesday that ing coalition at the Centre, was now indulging in the drama of seeking clarifications and amendments to the ordinances for the consumption of the farmer organisations and unions, which had seen through their gimmickry.

"You think the people of Punjab, and the

tion. From selling Punjab's water rights by clearing the SYL to now selling off the rights and welfare of the farmers, who have fed the nation for decades, SAD has done nothing but bartered away the state's interests to promote their petty political interests through the years, the Chief Minister said.

Meanwhile, the Chief Minister has ridiculed the statements of Harpal Singh Cheema

Shah Times

कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र पर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

विपणन का रुझान मजबूत और प्रभावी होना चाहिए: अरुण

● तकनीकी सत्र के दौरान वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने रखे अपने विचार ● सभी प्रतिभागियों को वितरित किए गए प्रमाण पत्र

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। आजकल कृषि क्षेत्र में कृषि फसलों के साथ पेड़ों को उगाने के लिए कृषि वानिकी का प्रचलन है। यह किसानों के लिए एक लाभदायक प्रथा है और पर्यावरणीय स्थिरता को भी बनाए रखती है।

कृषि वानिकी अपने उत्पादों के लिए विपणन रुझानों पर पनपती है और निर्वाह करती है। कृषि वानिकी उत्पादों के कुशल और प्रभावी विपणन की निरंतरता व्यापारियों से उत्पादकों और बाजार परिवर्तन के सक्रिय समर्थन पर निर्भर करती है।

कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन के रुझान और बाधाओं को ध्यान में रखते हुए विस्तार प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून ने मानव संसाधन और विकास मंत्रालय के मानव संसाधन विकास योजना के तहत तकनीकी सहायकों और संस्थान के तकनीशियनों के लिए कृषि वानिकी उत्पादों के बाजार तंत्र पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। ऋचा मिश्रा, भा.व.सं. प्रमुख विस्तार विभाग ने अरुण सिंह रावत, भा.व.से., महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद और निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण को परिचयात्मक टिप्पणी दी। अरुण रावत ने प्रशिक्षण का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि संस्थान में सभी तकनीकी सहायक और तकनीशियन बहुमुखी कर्तव्यों में लगे हुए हैं और यह प्रशिक्षण संबंधित क्षेत्र में काम करने वाले विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया जा रहा है।

इसलिए प्रशिक्षण निश्चित रूप से सभी प्रतिभागियों के लिए विशेष रूप से खेत और बाजार सर्वेक्षण के दौरान फायदेमंद होगा। उन्होंने देश में मांग और आपूर्ति के परिदृश्य का भी उल्लेख किया और कहा कि मांग और आपूर्ति के बीच अंतर को बड़े पैमाने पर कृषि वानिकी को अपनाने से भरा जा सकता है।

लेकिन विपणन का रुझान मजबूत और प्रभावी होना चाहिए। तकनीकी सत्र के दौरान डॉ चरण सिंह, वैज्ञानिक-ई विस्तार प्रभाग ने कृषि वानिकी और कृषि वानिकी उत्पादों पर व्याख्यान दिया। डी. पी. खाली ने प्रभावी विपणन के लिए कृषि वानिकी उत्पादों के मूल्य वर्धन पर व्याख्यान दिया। एन. पी. सिंह ने कृषि वानिकी उत्पादों के विपणन और बाजार सर्वेक्षण की कसौटी और विधि पर बात की। उन्होंने बाजार चैनलों और उनके कार्य पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने सुझाव दिया कि विपणन श्रृंखला को सरल बनाया जाना चाहिए ताकि किसान अपने उत्पादों को बेचने के लिए आसानी से बाजार खोज सकें। कार्यक्रम के सफल समापन के बाद ऋचा मिश्रा ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये।

कार्यक्रम का समापन रामबीर सिंह, वैज्ञानिक-डी विस्तार प्रभाग द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ। कार्यक्रम का संचालन विस्तार प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. चरण सिंह ने किया। डॉ. देवेंद्र कुमार, वैज्ञानिक-ई, अजय गुलाटी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, विजय कुमार, एसीएफ और प्रीत पाल सिंह, डिप्टी रेंजर सहित टीम के अन्य सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एक सराहनीय कार्य किया।